महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा

से

पी-एच. डी. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

नारी चेतना के संदर्भ में ब्रज लोकगीत : एक अध्ययन

अनुसंधित्सु

सायमा अकरब साबिर खान

शोध निर्देशक

प्रो. कल्पना गवली

Executive summary of the Ph.D. Thesis

Table of contents of methodology, the key findings, conclusions and recommendations / suggestions etc. along with the title, bibliography and webliography

Table of contents of methodology : (शोध-प्रबंध के अनुसार अनुक्रमणिका)

● प्राक्कथन ।.....viii

(विषयचयन, प्रेरणा स्त्रोत, शोध रूपरेखा एवं धन्यवादज्ञापन)

अध्याय - 1

1.1 (अ) ब्रज का परिचय एवं क्षेत्र निर्धारण 1-9

● 'ब्रज' शब्द व्युत्पत्ति एवं 1

● नामकरण. 2-3

● ब्रज की भौगोलिक सीमा एवं निर्धारण. 4-6

● ब्रज भाषा का विकास : संक्षिप्त परिचय 7-9

1.2 (ब) ब्रज के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक परिदृश्य 10-23

● निष्कर्ष 20-21

अध्याय - 2

2.1 (अ) लोकसाहित्य का परिचय एवं वर्गीकरण 24–42

● लोकसाहित्य का परिचय एवं वर्गीकरण 24-26

● लोककथा 27-29

● लोकगाथा 30-32

● लोकगीत 33 -37

● लोकनाट्य 38-40

● लोकसुभाषित 41-42

2.2 (ब) ब्रज लोकसाहित्य का स्वरूप एवं स्वरूप 43-84

● ब्रज लोककथा एवं लोकगाथा 45-52

● ब्रज लोकनाट्य एवं लोकसुभाषित 53-61

● ब्रज लोकगीत एवं वर्गीकरण 62-78

● निष्कर्ष 79-80

अध्याय - 3

नारी चेतना के संदर्भ में लोकगीत 85-144

● नारी चेतना से तात्पर्य 85- 90

● ब्रज लोकगीतों में नारी वेदना 91- 104

● ब्रज लोकगीतों में नारी चेतना का स्वर 105-121

● ब्रज लोकगीतों में नारी अस्मिता का बोध 122-140

● निष्कर्ष 141-142

अध्याय - 4

आधुनिक युग और लोकसाहित्य 145 - 157

● आधुनिक युग और लोकसाहित्य के विषय में विद्वानों के मत 145

● लोकसाहित्य का अस्तित्व 145-150

● लोकसाहित्य का संकलन एवं संरक्षण 151-156

● निष्कर्ष 157

- साक्षात्कार 158-167
- उपसंहार 169-171
- परिशिष्ट
- आधार ग्रंथ सूचि 172-173
- संदर्भ ग्रंथ सूचि 174-177
- पत्र-पत्रिका 178
- कोश 179

The key findings, conclusions and recommendations/ suggestions etc. along with the title, bibliography and webliography (शोध प्रारूप, उपसंहार एवं विषय शीर्षक संदर्भ ग्रंथ सूचि)

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत का परिचय उसके साहित्य से उपलब्ध होता है । साहित्य किसी भी देश के समाज,संस्कृति एवं सभ्यता का अभिन्न अंग होता है। साहित्य को दो भागों में बाँटा गया है, 1. शिष्ट साहित्य और 2.लोकसाहित्य । शिष्ट साहित्य के मुख्यत: दो रूप हैं 1. गद्य साहित्य 2. पद्य साहित्य। लोकसाहित्य को भी शिष्ट साहित्य कि भांति विभाजित किया जा सकता है किंतु लोकसाहित्य मुख्यत: गेय रूप में प्राप्त होता है, अत: लोकसाहित्य को विद्वानों ने कला एवं संस्कृति के मानदण्डों के आधार पर पाँच भागों में बाँटा है । लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य, लोकनाट्य, लोकगाथा, लोकोत्तियाँ या लोकसुभाषित आदि । लोकसाहित्य मौखिक रूप में अधिक प्राप्त होता है । लोकसाहित्य का मौखिक रूप में उपलब्ध होना उसकी प्रधानता है । समाज इसकी उपलब्धि तब से है जब से मनुष्य ने धरती पर जन्म लिया है । मानव की प्रवृत्ति रही है मनोरंजन हेतु गीत या किस्सागोई को अपना सहारा बनाना । हम लोकसाहित्य को समय सीमा में नहीं बांध सकते क्योंकि प्रचलित लोकगीत, लोक कथा, लोकगाथा, आदि के प्रेरणा श्रोत तो भगवान ही है । वैदिक काल के ग्रंथों, पुराणों से प्राप्त ज्ञान को अर्जित कर लोक मानव ने इस लोक साहित्य का सृजन किया है इस विषय में डो. दिनेश्वर प्रसाद ने लिखा है- "लोककहानियों की मुख्य विशेषता उसकी सुखान्तता है । आज भारत के विभिन्न प्रदेशों से जो लोक साहित्य प्राप्त हो रहा है, वह सदैव एकसा नहीं रहा होग समय दर समय उसमें भी विकासशील परिवर्तन आया है। मध्ययुग में ऐतिहासिक लोकनायकों और वीरों की जो कहानियाँ आज प्रचलित है उनसे पहले नहीं रची गयी होंगी शायद"। लोकसाहित्य समाज में आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन समय में था।

लोकसाहित्य का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। आमजनता जिस भाषा एवं बोली में अपने ह्रदय की भावाभिव्यक्ति से हर्षोल्लास, वेदना, चेतना, व्यक्त करता है वह लोकसाहित्य से है। जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव जिन षोडश(सोलह) संस्कारों का निवार्ह करता चला आया है । वे प्राय: हमारे ऋषि-

मुनियों की देन है। वैदिक काल से आज तक हम इन सभी रीति-रिवाजों का निर्वहन कर रहे हैं। लोकसाहित्य का समूचा अस्तित्व मानव की संस्कृति एवं संस्कार के वृत में समाहित है। विविध धार्मिकोत्सव, तीज-त्यौहार में लोकमानव लोकगीत के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक विरासत को सजीव बनाए हुए है। जन्म के समय सोहर के गीत, मुण्डन के गीत, छोछक गीत आदि गाये जाते है, ऋतु-गीत में बारहमासा के गीत में प्रकृति के आधार पर चैत से फागुन तक के लोकगीत, श्रमिक गीत में खेती के समय बोवाई, निराई, कटाई आदि के गीत गाकर ग्रामीण मानव अपने कार्यभार से बिसराव करते हैं। लोकगीत आमजन समुदाय के हर्ष उल्लास की अनुभूति से परिपूर्ण हैं। किस्सागोई हमें हमारे पूर्वजों से विरासत मिली है। दादी-नानी की कहानियाँ, गाँव में बड़े-बूढ़े शीत ऋतु की कड़ाके की ठंड में अलाव जला कर लोककहानियाँ सुनाया करते है। गाँव में मेले में नट तमाशे नाटक जैसे लोकनाट्य आज भी खेले जाते हैं। लोकभाषा में दैनिक व्यवहार में कई बार मुहावरे कहावतों का प्रयोग देखने को मिलता है। लोकगाथा में भारतवर्ष के वीरों की गाथा उल्लेख भी मिलता है। लोकसाहित्य यह मानव के जन्म से मृत्यु तक लोकसंस्कृति के साथ अटुट संबंध है, हर स्त्री,पुरुष,बालक,जवान,वृध्द सभी लोगों की सम्मिलित पूँजी है संपत्ति है, तथा जिसके संरक्षण का दायित्त्व हमारा है।

आधुनिक युग में लोकसाहित्य के लुप्त होते अस्तित्त्व पर प्राचार्य बापूराव देसाई जी का कथन है कि- "आज के युगीन संदर्भ और जीवन प्रणाली में व्यापक मात्रा में तबदील होने की वजह से लोकबोलियों के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लग गया हैं। और लोकसाहित्य अब शायद अतीत की वस्तु बनती जा रही है, लोकसाहित्य को विस्मृत होने से बचाने के लिए उसे शब्दबद्ध कर, भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखना अनिवार्य हो गया है।"

साहित्य समाज का दर्पण है ठीक उसी प्रकार लोकसाहित्य आम जनता के ह्रदय का दर्पण है। लोकसाहित्य आमजनता का वह साहित्य है,जिस साहित्य के माध्यम से आम जन समुदाय खुद को आनंदित कर अपने जीवन को सुख समृद्ध बनाने का प्रयास करता है। लोक साहित्य का सीधा संबंध

सीधे सच्चे लोकमानव से है जो किसी भी तरह के प्रतिबंध को स्वीकार नहीं करता यह मौखिक साहित्य है। अत: यह कह सकते है कि जब से पृथ्वी पर मानव ने जन्म लिया है तभी से लोक साहित्य का उद्भव उसके साथ ही हुआ है। लोक साहित्य सदियों से मौखिक परंपरा का अनुसरण करते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता चला आया है। कृष्णदेव उपाध्याय ने लोक साहित्यिक विधाओं का बहुत ही बारीकि के साथ अध्ययन किया है। वे कहते है- "चिरकाल से अर्जित ज्ञान राशि का नाम साहित्य है। जो साहित्य साधारण जनता से संबंध रखता है उसे 'लोक साहित्य' कहते हैं । जिस प्रकार साधारण जनता का जीवन नागरिक जीवन से भिन्न होता है उसी प्रकार उनका साहित्य भी आदर्श साहित्य से पृथक होता है"। लोक साहित्य को साहित्यिक रूप देने तथा लोक संस्कृति को संझो ने का श्रेय डॉ. सत्येंद्र, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, मोहनलाल मधुकर, श्याम परमार, डॉ.कन्हैयालाल सहगल, डॉ. सूर्य किरण पारीख, रामनरेश त्रिपाठी आदि साहित्यजीवीयों को जाता है।

लोकगीतों में मुख्यतः महिलाओं ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आमजन जब किसी अवसर पर आनंदमय होकर लहरा के गा उठे तब वह लोकगीत कहलाता है। ब्रज लोकगीतों की विविधता और बहुलता क प्रमाण बहुत अधिक है। लोकजीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है जो ब्रज लोकगीतों की परीधि में न आया हो । ब्रज लोकगीतों में संस्कार गीत, तीज-त्यौहार के गीत,शादी-ब्याह के गीत, ऋतु संबंधी गीत, कृषि संबंधित गीत, श्रम गीत,देवी-देवताओं के गीत आदि का समावेश किया जाता है। इसके अतिरिक्त सामाजिक गीतों में समाज सुधारक गीत भी प्राप्त होते हैं, जिनमें पर्यावरण सुधार और संरक्षण, परिवार नियोजन, बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, देश-प्रेम, नारी जागृति, भ्रष्टाचार आदि विषयों पर प्रचूर मात्रा में लोकगीत प्राप्त होते हैं।

जीवन में किसी भी कार्य पीछे उद्देश्य का होना बेहद जरूरी है बिना उद्देश्य किया जाने वाला कार्य निर्रथक है । लोकसाहित्य मौखिक साहित्य है। यह वाचिक परंपरा से संबंधित है अत: मौखिक

साहित्य का संकलन कार्य जटिल है। आधुनिक युग में हिंदी गद्य एवं पद्य में नारी विमर्श पर काफी कार्य हो चुका है। विश्वविद्यालायों में लोक साहित्य के प्रति भारी उदासीनता देखने को मिली है। नये विषय और नवीन तथ्यों के आंकलन पर लोकसाहित्य खरा नहीं उतरता ऐसी विचारधारा के कारण लोक साहित्य को कम आंका जाता है। मेरा उद्देश्य ऐसी विचारधारा का खंडन करना है। लोकगीत आज भी अपनी प्रासंगिकता को सिद्ध करते हैं।

नारी की पीड़ा, वेदना, शोषण आदि को लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त किया है। श्रमिक गीतों के अंतर्गत नारी ने खेतों में काम करते समय एवं चक्की चलाते समय, गीतों के माध्यम से अपनी पीड़ा को व्यक्त करती है इन गीतों में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से चेतना का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त दु:ख-सुख, विरह वेदना,आदि भावों को इन लोकगीतों में दर्शाया गया है जहाँ वेदना भी है और चेतना भी। नारी उत्पीड़न की दशा सदियों से स्थिर है। महिलाएं घरेलू हिंसा, असमानता, शारीरिक एवं मानसिक शोषण का शिकार होती है। आज हम 21वीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं लेकिन समाज में आज भी नारी की दशा जैसी थी वैसी ही बनी हुई है। महिलाएं हर घर में भयावह परिस्थितियों से जूझ रहीं है। समाज में अभी भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही हैं। अपने ऊपर हो रहे अत्याचार के जानते हुए भी ख़मोश है तो इसमे भी उस के संस्कार है। बचपन से नारी को संस्कार के नाम पर त्याग, बलिदान, सहनशक्ति आदि का ज्ञान दिया जाता है। वह चाह कर भी खुलकर इस अन्याय के खिलाफ आवाज नहीं उठा सकती है। लोकगीतों में कालांतर परिवर्तन आए हैं लोकगीतों में नारी ने अपनी वेदना को चेतना रुपी स्वर से प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध लोकसाहित्य कि विधा लोकगीतों से संबंधित है। शोध विषय का शीर्षक नारी चेतना के संदर्भ में लोकगीत है। इस शोध प्रबंध में लोक साहित्य एवं लोकसाहित्यिक विधाओं पर सत्यता एवं एकरूपता से अन्वेषण कर लेखन कार्य किया गया है। विषय अनुसार शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य नारी चेतना को दर्शाते हुए ब्रज लोकगीत हैं। विभिन्न ग्रंथों के अध्ययन एवं क्षेत्रिय कार्य के आधार पर संकलित ब्रज लोकगीतों को प्रस्तुत किया है।

शोध प्रबंध को चार भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय को अ. और ब. भागों में बाटाँ गया है। अ. के अंतर्गत संबंधित शीर्षक के 'ब्रज' शब्द की व्युत्पत्ति, नामकरण की विस्तृत चर्चा की गई है, साथ ही प्रमाणिक पुस्तकोंब में दिए गये संदर्भों के आधार पर 'ब्रज' की भौगोलिक सीमाओं को मानचित्र सहित प्रस्तुत किया गया है। ब. भाग में ब्रज भूमि कि ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिदृश्य पर विस्तृत चर्चा की है। ब्रज भूमि कृष्ण भगवान की पावन भूमि है यहां के कण-कण में कृष्ण की भक्ति समायी है। ब्रज की ऐतिहासिकता को समय सीमा नहीं दर्शाया गया है लेकिन मुगल कालीन परिस्तिथियों का वर्णन सत्यपरकता के आधार पर किया गया है। सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिदृश्य के अंतर्गत ब्रज के तीज-त्यौहार, मेले, पर्व आदि को व्यक्त करने के बाद ब्रज में धार्मिक गतिविधियों के बढ़ानेवाले अष्टछाप के कवि वल्लभाचार्य एवं उनके शिष्यों के योगदान को बताया गया है। इस पंथ के अन्य अनुयायीयों का भी संक्षिप्त चित्रण किया गया है। अंत में निष्कर्ष के तहत पूरे अध्याय का सार दिया गया है।

द्वितीय अध्याय को दो भागों में बाँटा गया है। अ. भाग का शीर्षक लोकसाहित्य का परिचय एवं वर्गीकरण है। इस भाग के अधीन लोकसाहित्य की आवधारणा और विभाजन, लोकसाहित्य की संस्कति एवं परंपरा जैसे बिंदुओं पर चर्चा की गई है। द्वितीय अध्याय के प्रथम भाग में लोक साहित्य की विभिन्न विधाएं लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोकसुभाषित आदि का परिचय और उदाहरण सहित लेखन कार्य किया गया है। द्वितीय अध्याय के ब. भाग में ब्रज भाषा में रचित लोकसाहित्य के स्वरूप और विकास की चर्चा की गई है। लोकसाहित्य की भांति ब्रज लोकसाहित्य का विभाजन कर प्रत्येक विधा का उदाहरण सहित प्रस्तुत किया है। इस शोध प्रबंध का मुख्य विषय लोकगीत है, इसलिए ब्रज लोकगीतों को केंद्र में रखकर अध्ययन किया गया है। लोकगीतों को विभाजित कर उन्हें उदाहरण सहित दिखाया गया है। अंत में निष्कर्ष के अंदर समग्र अध्याय का अवलोकन किया गया है।

तृतीय अध्याय में नारी चेतना से तात्पर्य पर विवेचन की गई है। इस अध्याय के अंतर्गत ब्रज लोकगीतों में नारी की पीड़ा, वेदना एवं यातनाओं से लिप्त गीतों को प्रस्तुत किया गया है। ब्रज लोकगीत और नारी, ब्रज लोकगीतों में चेतना का स्वर, ब्रज लोकगीतों में नारी अस्मिता का बोध आदि बिंदुओं से संबंधित कुछ प्रकाशित एवं अप्रकाशित गीतों का संकलन कर प्रकाशित किया गया है। अंत में निष्कर्ष में समग्र अध्याय का सारांश दिया गया है। चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत आधुनिक युग में लोकसाहित्य का अस्तित्व एवं भविष्य, लोकसाहित्य में पुनरावृति से बचाव एवं डिजिटल संकलन के साथ अन्य सुझावों का उल्लेख किया गया है। आज के युग में नवीन विषयों की श्रेणी में लोकसाहित्य उतना ही प्रभावशाली है जितने के अन्य विषय। अंत में लोकगीतकारों के साक्षात्कार को स्थान देकर अध्याय को सम्पन्न किया है। उपसंहार में समग्र शोध प्रबंध का अवलोकन कर लोकसाहित्य को नई दिशा देने का प्रयास किया गया है। अंत में सूचियों की श्रृंखला में परिशिष्ट के अधीन आधार ग्रंथ सूचि, संदर्भ ग्रंथ सूचि, पत्र-पत्रिकाएं, कोश का विवरण दिया गया है।

उपसंहार

लोकमानव की मौखिक अभिव्यक्ति को लोकसाहित्य संज्ञा से अभिहित किया गया है। मानव को वाणी के वरदान के साथ ही ईश्वर ने ज्ञान के भंडार से मनुष्य को आप्लावित किया, यही ज्ञान की संचित राशि है और ग्रामीण मानव के जीवन का रत्न लोकसाहित्य है। लोकमानव अपने दैनिक क्रिया में घटित सुख-दु:ख की अनुभूतियों को जिसप्रकार प्रकट करता है वही लोकसाहित्य है। वासुदेवशरण अग्रवाल जी ने कहा है कि- "अर्वाचीन मानव के लिए लोक सर्वोच्चय प्रजापति है। लोक, लोक की धात्री सर्वभूत माता पृथिवि और लोक का व्यक्त रूप मानव, यही हमारे नए जीवन का अध्यात्म शस्त्र है।" लोक साहित्य में यथार्थवाद तथा आदर्शवाद का समागम उपलब्ध होता है। लोक साहित्य मनीषियों ने लोकसाहित्य को लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, एवं लोकासुभाषित

भागों में विभाजित किया है। लोकगीत सर्वथा चर्चित एवं संपूर्ण विधा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने ग्राम गीतों के विषय में लिखा है – "भारतीय जनता का स्वरूप पहचानने के लिए पुराने परिचित ग्राम-गीतों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है, केवल पंडितों द्वारा परिवर्तित काव्य का अनुशीलन ही अलम नहीं है। जब-जब शिष्ट काव्य पंडितों द्वारा परिवर्तित काव्य का होगा तब-तब उसे सजीव और चेतन प्रसार देश की सामान्य जनता के बीच स्वछंद बहती हुई प्राकृतिक भावधारा से तत्त्व ग्रहण करने से प्राप्त होगा।" वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार "लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोलते चित्र हैं।" डॉ. कुन्दनलाल उप्रेती ने कहा है कि "लोकसाहित्य का किसी देश-विशेष के जनजीवन के लिए सांस्कृतिक महत्व है। किसी देश का समाज, धर्म, साहित्य, दर्शन, लोकसाहित्य में यथार्थ रूप में सुरक्षित है। इसके अध्ययन से हमें देश-विशेष के राष्ट्रीय जीवन का पूरा चित्र मिलता है।" वासुदेवशरण अग्रवाल का कथन है- "लोकहमारे जीवन का महासमुद्र है; उसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित रहता है। लोक राष्ट्र का अमर स्वरूप है लोक कृतस्न ज्ञान और सम्पूर्ण अध्ययन में सब शास्त्रों का पर्यवसान है। लोकसाहित्यकारों की लोकसम्पदा के संकलन संघर्ष की कथा कहते हैं

रतीय लोक साहित्य मनीषियों में डॉ. सत्येंद्र, वासुदेव शरण अग्रवाल, आचार्य रामनरेश त्रिपाठी, डॉ. कुन्दनलाल उप्रेती, डॉ. श्याम परमार, डॉ. कृष्ण देव उपादध्याय, डॉ. कुलदीप, डॉ. मोहनलाल मधुकर, डॉ. बापूराव देसाई आदि के कठिन परिश्रम एवं साहस के कारण अप्रकाशित साहित्य संकलित हुआ तथा संरक्षित भी जिसके लिए हम इनके आभारी है।

लोकसाहित्य साहित्यिक साधना की निरंतर बदलती प्रकृति का एक उदाहरण है, जो समय और स्थान की आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित होता है। लोक साहित्य की विशेषता उन लोगों से होती है जिनसे वह संबंधित है इसलिए इसे जन साहित्य कहना अधिक उचित होगा। लोक साहित्य

लोगों की इच्छाओं, आकांक्षाओं, रचनात्मकता और सौंदर्य संबंधी आवेगों से उत्पन्न हुआ है और लोगों के जीवन और अनुभवों से निकटता से जुड़ा हुआ है। भारत में अनूठी संस्कृति है। भारत में लोक साहित्य अधिकांश विषयों, कथाओं और मुद्दों की दृष्टि से प्रगतिशील, क्रांतिकारी और समृद्ध रहा है। विश्व के लोक साहित्य. वस्तुतः भारतीय ग्रन्थ विश्व भर के लोक साहित्य के प्रेरणास्रोत हैं।

इस शोध प्रबंध में नारी को केंद्र में रखकर लोकगीत प्रस्तुत किए गए हैं। लोकगीतों के माध्यम से नारी जीवन की समस्याओं को केंद्र में लाने का प्रयास किया है।नारी अपने दु:ख-सुख, हर्ष-विषाद, अत्याचार, शोषण, दिनचर्या, जीवन की चुनौतियाँ आदि के माध्यम से व्यक्त करती है। महिलाएं प्रेम-विवाह, रोजगार, राजनीतिक या धार्मिक कार्यों में वर्जनाएं, अंध-पुत्रमोह, कन्या भ्रुणहत्या, बालिका-विवाह, बालिका ट्राफिकिंग, अवयस्क मातृत्व, गर्भपात की समस्याएं, विवाह में निर्णय न लेने की स्थितियाँ, कामकाजी महिलाओं पर भेदभाव,, यौन-शोषण, मानसिक उत्पीड़न आदि समस्यओं का उल्लेख लोकागीतों में मिलता है

शोध प्रबंध में ब्रज लोकगीतों का वर्गीकरण कर संस्कार गीत, शादी-ब्याह के गीत, मौसम एवं माह विशेषक गीत, तीज-त्यौहार के गीत, खेलकूद के गीत, शादी-ब्याह के गीत आदि गीतों को उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया हैं। लोकसंगीत का नारी जीवन में अहम भूमिक होती है। नारी को लोकगीतों में साहसी और सशक्त रूप में प्रस्तुत किया है, जिससे यह साबित होता है कि वह अपने जीवन में समस्याओं का समानाधिकारी रूप से सामना करती है। सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता लोकगीतों के माध्यम से जिसमें समाज सुधारक गीत समाज में महिलाओं को संघर्ष करते हुए दर्शाते हैं। इस प्रकार लोकगीत नारी के जीवन, संघर्ष, और सशक्तिकरण को प्रस्तुत करते हुए सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन का माध्यम बने। लोक साहित्य लोगों की इच्छाओं, आकांक्षाओं, रचनात्मकता और सौंदर्य संबंधी आवेगों से उत्पन्न होता है और इसलिए यह आमजन समुदाय के जीवन और अनुभवों से बारीकी से जुड़ा हुआ है।

इस शोध प्रबंध के माध्यम से ब्रज लोकगीतों के संस्कार गीत, तीज-त्यौहार के गीत,शादी-ब्याह के गीत, ऋतु संबंधी गीत, कृषि संबंधित गीत, श्रम गीत,देवी-देवताओं के गीत आदि का

संकलन किया गया है । इसके अतिरिक्त सामाजिक गीतों में समाज सुधारक गीत भी हैं, जिनमें पर्यावरण सुधार और संरक्षण, परिवार नियोजन, बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, देश-प्रेम, नारी जागृति, भ्रष्टाचार आदि विषयों पर संकलित लोकगीतों को इस शोध प्रबंध से प्रकाशित किया जा रहा है।

परिशिष्ट

आधार ग्रंथ सूचि,संदर्भ ग्रंथ सूचि, पत्रपत्रिकाएँ एवं कोश-

❖ आधार ग्रंथ सूचि

1. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव — भोजपुरी लोकसाहित्य; विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, सं 2002 ई.

2. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव, — लोक साहित्य की भूमिका; साहित्य भवन प्रा. लि. जीरो रोड, इलाहाबाद, सन् 1998 ई.

3. उप्रेती, कुन्दनलाल — लोकसाहित्य के प्रतिमान; भारत प्रकाशन मंदिर , अलिगढ़ सन् 1971 ई.

4. परमार, श्याम — भारतीय लोकसाहित्य; राजकमल पब्लिकेशन लिमिटेड, बम्बई, 1954

5. मधुकर, सं मोहनलाल — ब्रज लोक वैभव; राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, 118 वसुंधरा कॉलोनी, टोंक रोड,जयपुर

6. मीत्तल, प्रभुदयाल — ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास ; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; सन् 1966

7. सांकृत्यायन, सं. राहुल/ उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव — हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास (भाग 16); लेखक- डॉ. सत्येंद्र — ब्रज लोक साहित्य; काशी नागरी प्रचारिणी सभा; काशी ; प्र. संवत् 2017 ई.

8. डॉ. सत्येंद्र — ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन ;

साहित्य रत्न भण्डार, आगरा ; संस्करण .ई 1949

9. डॉ. सत्येंद्र ब्रज लोकसंस्कृति;

ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा, सं. 2005 वि,

10. सं. डॉ. सत्येंद्र ब्रज साहित्य, (कन्हैयालाल पोद्दार अभिनंदन ग्रंथ)

अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा

❖संदर्भ ग्रंथ सूचि

1. अग्रवाल, डॉ. कैलाशचंद्र — ब्रज लोकसाहित्य में लोकचेतना और जीवन दर्शन, चिन्मय प्रकाशन, मोतीलाल नेहरू रोड, आगरा, संस्करण प्रथम, सन् 1989 ई.

2. अली, डॉ. इरशाद — मुस्लिम लोकगीतों का विवेचनात्मक अध्ययन; अनुभव प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. सन् 1985 ई.

3.अग्रवाल, सं. वासुदेव — साहित्य वाचस्पति सेठ कन्हैयालाल पोद्दार अभिनंदन ग्रंथ; अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मंडल; मथुरा, सं 2010

4. उप्रेती, कुन्दनलाल — लोकसाहित्य के प्रतिमान; भारत प्रकाशन मंदिर , अलिगढ़ सन् 1971 ई.

5. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव — भोजपुरी लोकसाहित्य; विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, सं 2002 ई.

6. उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव, — लोक साहित्य की भूमिका;

साहित्य भवन प्रा. लि. जीरो रोड, इलाहाबाद, सन् 1998 ई.

7. उमरे, डॉ. करुणा — स्त्री-विमर्श: साहित्यिक और व्यवहारिक संदर्भ;
अमन प्रकाशन, कानपुर
सं. प्रथम सन् 2009

8. डॉ. कुलदीप — लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन;
प्रगति प्रकाशन, बैतुल विल्डिंग, आगरा 3 सन् 1972 ई.

9. के. पी. प्रेमिला — स्त्री अध्ययन की बुनियाद;
राजकमल प्रकाशन दिल्ली, वर्ष 2015

10 . चतुर्वेदी, डॉ. शेफाली — ब्रज लोकसाहित्य : नव चिंतन;
कल्पना प्रकाशन; नई दिल्ली, वर्ष 2011

11. चारण, डॉ. सोहनदान — राजस्थानी लोक-साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन;
राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर

12. जैन, शांति — नारी-जीवन;
मंत्री श्री जवाहर साहित्य समिति, बीकानेर राजस्थान,
सं. दुसरा, वर्ष 1969

13. जोशी, पं. शिवदयाल — लोकगीतों में रस योजना;
इंदु प्रकाशन, अचल तालाब, अलीगढ़, सन् 1985 ई.

14. तिवारी, रामचंद्र — हिंदी का गद्य साहित्य; विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, वाराणसी, उत्तर प्रदेश. सं. एकादश (11), 2016 ई.

15. देसाई, डॉ. बापूराव — लोकसाहित्यशास्त्र; विकास प्रकाशन, बर्रा, कानपुर, उत्तरप्रदेश. सं. प्रथम, वर्ष 2004

16. देसाई, डॉ. बापूराव — भारत की २५ बोलियों का सप्रयोग लोकसाहित्य; गरिमा प्रकाशन, कानपुर, उत्तरप्रदेश सं. प्रथम, वर्ष 2013

17. परमार, श्याम — भारतीय लोक साहित्य; राजकमल पब्लिकेशन लिमिटेड, बम्बई, 1954

18. परमार, श्याम — लोकधर्मी नाट्य परम्परा;

19. पचौरी, भगवान सहाय — ब्रज साहित्य का मूल्यांकन; विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, सन् 1971 ई.

20. प्रसाद, सं. माता — लोकगीतों में वेदना और विद्रोह के स्वर; सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन् 2007

21. पाण्डेय, मैनेजर — आलोचना की सामाजिकता;
वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 2005 ई.

22. पारीक, सूर्यकिरण — राजस्थान के लोकगीत;

23. भाटिया, डॉ. हर्षनंदिनी — ब्रज संस्कृति और साहित्य;
ज्ञान गंगा, चावड़ी बाजार, दिल्ली, सं. प्र. सन् 1995 ई.

24. भ्रमर, डॉ. रवींद्र — हिंदी भक्ति साहित्य में लोकतत्व;
भारतीय साहित्य मंदिर, शहदरा, दिल्ली,
सं. प्रथम सन् 1965 ई.

25. मीत्तल, प्रभुदयाल — ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास ;
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली; सन् 1966 ई.

26. मनीषा — हम सभ्यऔरतें;
सामयिक प्रकाशन, दरियागंज,दिल्ली.
सं. प्रथम, सन् 2009

27. वर्मा, डॉ. धीरेंद्र — ब्रजभाषा;
हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, सन् 1954 ई.

28. वर्मा, डॉ. विमला / सिंह जितेंद्र — ब्रज की लोककलाएं;
संस्कृति विभाग, लखनऊ, उत्तरप्रदेश.

वर्ष 1995.

29. वाजपेयी, कृष्णदत्त ब्रज का इतिहास;
अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा,
सन् 1955 ई.

30. शर्मा, डॉ. मालती ब्रज के लोक संस्कार गीत;
अनुभव प्रकाशन, गाजियाबाद, सं. प्रथम, सन् 2009 ई.

31. शर्मा, डॉ. कृष्णदेव लोकसाहित्य : समीक्षा;
अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली,
प्रथम संस्करण , सन् 1974 ई.

32. शर्मा, डॉ. हरद्वारीलाल लोकवार्ता विज्ञान (भाग- एक
और भाग- दो);
किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली
सं. प्रथम, सन् 2006 ई.

33. सांकृत्यायन, सं. राहुल/ उपाध्याय, डॉ. कृष्णदेव हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास (भाग 16);
लेखक- डॉ. सत्येंद्र ब्रज लोक साहित्य;
काशी नागरी प्रचारिणी सभा; काशी ; प्र. संवत् 2017 ई.

34. डॉ. सत्येंद्र ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन ;
साहित्य रत्न भण्डार, आगरा ; संस्करण .ई 1949

35. डॉ. सत्येंद्र — ब्रज लोकसंस्कृति;
ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा, सं. 2005 वि,

36. डॉ. सत्येंद्र — लोकसाहित्य विज्ञान;
शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी (प्रा. लि.), आगरा
प्रथम संस्करण, सन् 1962 ई.

37. डॉ. सत्येंद्र — ब्रज साहित्य का इतिहास;
भारती भंडार, लीडर प्रेस इलाहाबाद संवत 2024 वि.

38. सं. डॉ. सत्येंद्र — ब्रज साहित्य, (कन्हैयालाल पोद्दार अभिनंदन ग्रंथ)
अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा

39. हरि वियोगी — ब्रज माधुरीसार;
हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग.
सं. तीसरा, सन् 1939 ई.

40 . त्रिपाठी, रामनरेश — कविता कौमुदी, (भाग-पाँचवाँ)
हिंदी- मंदिर, प्रयाग, सं. पाँचवाँ, 1986 ई.

www.wikipedia.com

www.epustakalays.in

www.google.com